K22P 1521

Reg. No. : .....

Name : .....

I Semester M.A. Degree (CBSS – Reg./Sup./Imp.) Examination, October 2022

(2019 Admission Onwards)

HINDI

HIN1C01 : Medieval Hindi Poetry

Time : 3 Hours Max. Marks : 80

I. निर्देश – **चार** प्रश्नों की समीक्षात्मक व्याख्या कीजिए । (4×5=20)

1) नागमती चितउर पथ हेरा । पिऊ जो गए पुनि कीन्ह न फेरा ।।
नगर काहू नारि बस परा । तेइ । मोर पिऊ मोसों हरा ।।
सुआ काल होई लेइगा पिउ । पिऊ नहिं जात, जात बरु जीउ ।।
भएउ नरायन बावन करा । राज करत राजा बलि छरा ।।
करन पास लीन्हेउ के छन् । बिप्र रूप धरि झिलमिल इन्दू ।।
मानत भोग गोपिचन्द भोगी । लेइ अपसवा जलंधर जोगी ।।
लेइगा कृस्नहि गरुड़ अलोपी । कठिन बिछोह जियहिं किमि गोपी ? ।।
सारस जोरी कौन हरि, मारि बियाधा लीन्ह ? झुरि झुरि पींजर हौं भई, बिरह काल मोहि दीन्ह ।।

2) केकीकण्ठाभनीलं सुरवरविलासद्विप्रपादब्जचिन्ह । शोभादयं पीतवस्त्रं सरसिजनयनं सर्वदा सुप्रसन्नम् ।
पाणौ नाराचचापं कपि निकरयुतं बन्धुनासेव्यमानं । नौमीध्याम जनकीशम रघुवर्मनिशां पुष्पकरुद्धरमं ।।
कोशलेन्द्र पदकञ्जमंजुलौ कोमलावजमहेशवन्दितौ । जानकीकर सरोज लालितौ
चिन्तकस्यभनभृङ्गसङ्गिनौ ।।
कुन्दइन्दुदर गौर सुन्दरं अम्बिकापतिमभीष्टसिद्धिदम् । कारुणीक कलकञ्जलोचनं
नौमिशङ्करमनङ्गमोचनम् ।।

P.T.O.

3) उर भौन मैं मौन को घूंघट दे दूर बैठी विराजत बात बनी ।
मृदु मंजु पदारथ भूषन सों व सुलसे 'दुलसे रस–रूप–मनी ।
रसना अली कान गली मधि ह्व पधरावति ले चित सेज ठनी
घन आनंद बुझनी अंक बसै बिलसै रिझवार ।

4) अजौं तरौना ही रहयो स्तुति सेवत इक अंक ।
नाक–वास बेसरि लहयौ बसि मुकतनु कैं संग ।।

5) हसम हयग्गय देस अति, पति सायर म्रज्जाद ।
प्रबल भूप सेवहिं सकल, धुनि निसांन बहु साद ।।

6) ए अलि ! कहा जोग में नीको ? तजि रसरीति नन्दनन्दन की सिखवत निर्गुन फीको ।।
देखत सुनत नाहिं कछु स्रवननि, ज्योति ज्योति करि ध्यावत ।
सुन्दरस्याम दयालु कृपानिधि कैसे हौ बिसरावत ?
सुनि रसाल मुरली सुर की धुनि सोइ कौतुक रस भूलें । अपनी भुजा ग्रीव पर मेलै गोपिन के सुख फूलैं ।।
लोककानि कुल को भ्रम प्रभु मिलि के घर बन खेली । अब तुम सूर खवावन आए जोग जहर की डेली ।।

7) लोका मति के भोरा रे । जो कासी तन तजै कबीरा, तौ रामहि कहा निहोरा रे ।।
तब हम वैसे अब हम ऐसे, इहै जनम का लाहा रे ।
ज्यूं जल में जल पैसि न निकसै यूं दुरि मिल्या जुलाहा रे ।।
राम भगति–परि जाकौ हित चित ताकौ अचिरज काहा रे ।
गुरु–परसाद साध की संगति, जन जीतें जाइ जुलाहा रे ।।
कहै कबीर सुनहू रे संतो, भ्रमि परै जिनि कोई रे ।
जस कासी तस मगहर ऊसर, हिरदै राम सति होई रे ।

II. किन्हीं **तीन** प्रश्नों के आलोचनात्मक उत्तर लिखिए । (अधिकतम **150** शब्द) । (3×8=24)

8) पद्मावती समय का काव्य सौन्दर्य ।

9) कबीर की भक्ति भावना ।

10) जायसी का वियोग वर्णन ।

11) सूर का वात्सल्य वर्णन ।

12) तुलसी की सांस्कृतिक दृष्टि ।

III. किन्हीं **तीन** प्रश्नों पर विवरणात्मक लेख लिखिए । (अधिकतम **300** शब्द) । (3×12=36)

13) जायसी की प्रेमभावना पर प्रकाश डालिए ।

14) कबीरदास के दोहों के शिल्पपरक तत्वों पर विचार कीजिए ।

15) सूर की भक्ति भावना पर अपना विचार प्रकट कीजिए ।

16) तुलसीदास की लोकमंगल की भावना पर प्रकाश डालिए ।

17) कबीर के विचार हमेशा जनता के साथ ही रहे – इस कथन की पुष्टि कीजिए ।